कहानी

मकड़जाल

सब कुछ एकदम चुप-चुप था। उसे लगा कि हवा की सांस भी रुकी हुई है। पेड़ों की पत्तियां अडोल हैं और ललाट पर जो पसीने की बूंदें हैं, हवा उन्हें भी नहीं छू पा रही है। वैसे सब कुछ रोज जैसा ही था। सामने सड़क पर गाड़ियों के आने-जाने की रफ्तार में कोई कमी नहीं थी। लोगों के हाथों में ब्रीफकेस या बैग या छाता आज भी नजर आ रहा था। कड़क धूप से बचने के लिए कुछ औरतें-लड़कियों ने अभी से अपने सिर पर छाते को लहरा रखा था। कुछ दूर आगे जाकर डिस्ट्रिक्ट कोर्ट है, फिर थाना है। कोर्ट में आने वाले ज्यादातर लोगों के चेहरे सूखे थन की तरह लटके दिखते हैं। उनके आगे-पीछे काला कोट पहने या हाथों में लटकाए लोग भी होते हैं जिनके चेहरों पर भरी बरसात में भी धूप खिली रहती है। वह रोज इन लोगों को देखता है, आज भी देख रहा है। बस स्टॉप पर बस से उतरने के बाद आफिस तक की दूरी इनके साथ-साथ या इनके बीच ही चलकर तय करनी पड़ती है।

सामने पोस्ट ऑफिस की पुरानी बिल्डिंग है। कहते हैं, अंग्रेजों के जमाने में यह कोठी बनी थी। मोटी-मोटी दीवारें, ऊंची-ऊंची छतें। दीवारों पर सरकार कभी कभी रंग-रोगन कराती रहती है, फिर भी दीवारों से उनकी वरिष्ठता झलकती है। भवन का 'मेनगेट' आज बंद है। उसने अपनी घड़ी देखी- दस बजकर पांच मिनट, दस बजने से पांच-सात मिनट पहले ही रोज यह गेट खुल जाता है। लोग भीतर जाकर काउंटर के सामने खड़े हो जाते हैं। 'स्टाफ ' के लोग और भी पहले आ जाते हैं। दरबान स्टाफ के लोगों को पहचानता है, उनके लिए गेट खुलता-बंद होता रहता है।

भवन की तरह यह डाकघर भी बहुत पुराना है। शहर के एक बहुत बड़े हिस्से को यह सेवाएं देता है। गेट न खुलने के कारण आज बाहर ही भीड़ इकट्ठी हो गई है। एक बेचैनी, एक उत्सुकता के साथ गेट खुलने का इंतजार कर रही है। उत्सुकता धीरे-धीरे खीझ बनती जाती है। दरबान से बार-बार पूछा जा रहा है, 'क्या बात है? क्यों नहीं खोल रहे?' और दरबान 'हुकुम नहीं है चैकिंग चल रही है' कहकर हर बार इधर-उधर देखने लगता है। शायद ज्यादा कुछ बताने से दरबान को मना किया गया है।

वैसे सब कुछ रोज जैसा ही था। सामने सड़क पर गाड़ियों के आने-जाने की रफ्तार में कोई कमी नहीं थी। लोगों के हाथों में ब्रीफकेस या बैग या छाता आज भी नजर आ रहा था। कड़क धूप से बचने के लिए कुछ औरतें-लड़कियों ने अभी से अपने सिर पर छाते को लहरा रखा था। कुछ दूर आगे जाकर डिस्ट्रिक्ट कोर्ट है, फिर थाना है। कोर्ट में आने वाले ज्यादातर लोगों के चेहरे सूखे थन की तरह लटके दिखते हैं। उनके आगे-पीछे काला कोट पहने या हाथों में लटकाए लोग भी होते हैं जिनके चेहरों पर भरी बरसात में भी धूप खिली रहती है। वह रोज इन लोगों को देखता है, आज भी देख रहा है। बस स्टॉप पर बस से उतरने के बाद आफिस तक की दूरी इनके साथ-साथ या इनके बीच ही चलकर तय करनी पड़ती है।

उसे देखकर दरबान ने गेट को थोड़ा सा धकेला और उसके जाने भर की जगह बना दी। वह कुछ सकुचाते हुए ही भीतर आया। कहीं से आवाज उभरी थी, 'ये कैसे जा रहे हैं भीतर?' दरबान ने कुछ तेज स्वर में ही जवाब दिया, शायद यह सोचकर कि बाहर खड़े और लोग भी उसकी बात सुन लें- 'स्टाफ के आदमी हैं।'

भीतर घुसते ही एक बड़ा हॉल है और उसमें लाइन से कई काउंटर बने हैं। काउंटर के पीछे भी बहुत सारे लोग बैठते हैं। रजिस्ट्री, मनीऑर्डर, सेविंग अकाउंट, फिक्स्ड डिपोजिट... ढेरों काम, ढेरों काउंटर। हर काउंटर पर भीड़, हर जगह शोर, कागजों की खड़खड़ाहट, लोहे की बनी बड़ी-बड़ी मुहरों की छप्प-छप्प आवाज... इन सबके बीच लोगों की बातें, खिलखिलाहटें..

काउंटर के आगे या पीछे हर जगह सन्नाटा है। वह आज दस-पंद्रह मिनट लेट था। उसकी हमेशा कोशिश होती है कि पौने दस तक ऑफिस पहुंच जाए। पर कभी-कभी जब बस समय से नहीं मिलती या घर से ही निकलने में देर हो जाती है तो वह दस बजे के बाद ही पहुंच पाता है। उसने देखा, भीतर स्टाफ के लोग आए तो हैं पर अपनी सीट पर न बैठकर, दो-चार का झुंड बनाकर खड़े हैं और बतिया रहे हैं। सबके चेहरे पर जैसे सांझ की स्याही फैली हुई है। उसे देखकर एक-दो लोगों ने हाथ तो उठाए पर किसी के होंठों पर रोज जैसी मुस्कान नहीं फैली। छत पर लटके पुराने पंखों की किर्र-किर्र की आवाज जरूर चारों तरफ फैल रही थी।

उसने यह भी देखा कि उसे लोग कुछ आशंकित, भ्रमित, विस्मित आंखों से देख रहे हैं। वह इसका कुछ कारण समझता इससे पहले ही किशन पोस्टमैन उसके पास आकर बोला, 'बड़े साब आपको दो-तीन बार खोज चुके हैं, जाइए मिल लीजिए।'

वह कुछ चकित हुआ। सुबह-सुबह उसे खोजा जा रहा है... आखिर क्यों? वह पोस्टमास्टर की केबिन में घुसा तो पोस्टमास्टर के चेहरे पर फैला तनाव स्पष्ट था। सामने की कुर्सी पर एक इंस्पेक्टर बैठा था और तीन सिपाही पास में खड़े थे। उसे देखने के बाद पोस्टमास्टर ने इंस्पेक्टर की ओर आंखों से ही कुछ इशारा किया, किंतु वह इशारा इतना भयानक था कि उसे देख-समझकर वह सिहर उठा, दहल उठा। उसके हाथ-पैर कांपे और उसके मुख से निकला- 'नहीं, नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।' इंस्पेक्टर अब उठकर खड़ा हो गया था। उसके होंठों पर मुस्कान थी पर आंखें भयानक रूप से हिंस्र हो रही थीं। इंस्पेक्टर बिलकुल उसके पास आकर खड़ा हो गया। उसके पूरे शरीर में कंपकंपी फैली, आवाज थर्राई और बहुत कोशिश करके ही वह बोला- 'मुझे फंसाया जा रहा है।' इस बार इंस्पेक्टर खुलकर हंसा। उसे हंसते देखकर खड़े सिपाही भी हंसे। पोस्टमास्टर के होंठों पर भी पतली सी मुस्कान फैली। उसे अचानक ही पूरे कमरे में सिर्फ खिलखिलाहटें ही खिलखिलाहटें सुनाइदेने लगीं।

जब वह उस केबिन से बाहर निकला, इंस्पेस्टर और सिपाहियों के घेरे में, बाहर लोगों की एक कतार-सी बन चुकी थी। माहौल यों तो खामोशी में डूबा हुआ था परंतु दीवारों से बहुत-सी आवाजें जैसे टकरा-टकरा कर चारों तरफ फैल रही थीं। कुछ क्षणों पूर्व तक जो हवा चुप थी, उसमें भी अब भुनभुनाहट थी। वह अविश्वास और आश्चर्य से भरा हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रहा था, आसपास खड़े लोग और दूर हटते जा रहे थे। उसके शरीर से छूतरोग के कीटाणु उड़ रहे होंगे, सभी बचना चाहेंगे उससे। वह नीचे ही नीचे धंसता चला जा रहा था। किसी के चेहरे की ओर देख पाने की शक्ति पल भर में ही खत्म हो गई थी, किंतु चलते-चलते उसने सोचा, एक कोशिश और कर लेनी चाहिए। कम से कम उसके जो ये साथी हैं, सहकर्मी हैं, इन्हें तो सच का ज्ञान होगा ही। हो सकता है किसी की बुद्धि में बात आ जाए कि जो कुछ हो रहा है, गलत हो रहा है और इस गलत के खिलाफ वे कुछ बोलें। इस सोच के बाद, कुछ उम्मीद के सहारे ही, वह रुका और आवाज में पूरी तरह से जोर देकर हालांकि जोर देते वक्त उसके गले में खरखराहट आ गई थी और जब वह अपनी बात कह रहा था, उसे खुद ही लगा कि वह कुछ कह नहीं रहा है, मिमिया रहा है, उसने कहा, 'जब कैश-डिपार्टमेंट से मेरा कोई कंसर्न नहीं है तो मुझे क्यों घसीटा जा रहा है?' उसकी बात जैसे किसी ने सुनी ही नहीं, सुनी थी तो ध्यान देना शायद जरूरी नहीं समझा। लोग उसी तरह चुप खड़े रहे। वह अपने प्रयास में नाकाम हो गया था। इस नाकामी ने एक गीलापन से भर दिया उसे। उसने आंखों को जोर से भींच लिया और अंदर ही अंदर सुबकता-सुलगता रहा। अब तक उसे रुका हुआ देखकर, बल्कि उसे इस तरह बोलते हुए पाकर एक सिपाही ने आगे बढ़कर कुछ धक्का दिया, उसे आगे बढ़ाने के लिए ठेला ही था, परंतु अचानक के इस धक्के को वह सह नहीं पाया और लड़खड़ाते हुए आगे गिरने को हुआ कि तभी एक कंधा उसके हाथों में आ गया। वह गिरने से बच गया। वह तुरंत संभला। चालीस से ऊपर का हो जाने के बाद भी उसके शरीर में थोड़ी चुस्ती थी, हालांकि स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। सामने जिसका कंधा था वह अपनी मूछों पर हाथ फेर रहा था। भारी-भरकम आदमी। सौ किलो से अधिक ही उसका वजन होगा। कंधा पकड़े जाने के कारण उसे थोड़ी असुविधा हुई अपने काम में और उसने तुरंत एक हाथ से अपने कंधे के ऊपर के बोझ को झाड़ दिया। झाड़ने का उसका अंदाज ऐसा था जैसे नाक पर से मक्खी उड़ा रहा हो।

वह झटका खाकर एक तरफ हो गया, फिर बिना कुछ बोले उधर बढ़ चला जिधर वे लोग इशारा कर रहे थे। इन लोगों को आते देखकर

दरबान ने अब गेट थोड़ा ज्यादा ही खोल दिया, पर वह गेट के साथ ही बाहर की ओर खड़ा हो गया ताकि बाहर का कोई आदमी भीतर न घुस सके। आगे आगे इंस्पेक्टर और पीछे सिपाहियों के साथ वह। उनके पीछे-पीछे कुछ लोग थे। किसी अर्थी के पीछे-पीछे चलने वाले लोगों की तरह।

जो लोग बाहर खड़े थे, अब तक यह बात उनके बीच फैल गई थी कि भीतर कोई कांड हो गया है। पुलिस आई है, इसलिए अभी तक डाकघर का काम चालू नहीं हुआ है। पुलिस के जाने के बाद ही कुछ होगा। इन लोगों को बाहर निकलते देखा कुछ लोगों ने ठंडी सांस ली- चलो तमाशा खत्म हुआ। अब काम शुरूहुआ। जो लोग बार-बार घड़ी देख रहे थे उन्होंने फिर एक बार घड़ी देखी और कुछ बुदबुदाए। कुछ स्पष्ट नहीं था कि वे क्या कह रहे थे। पर इतना स्पष्ट था कि अब तक जो समय नष्ट हुआ था, उसे कोस रहे थे। कुछ लोगों ने इंस्पेस्टर को घेर लिया- क्या हुआ? क्या हुआ...इंस्पेक्टर चुप ही था। लोगों को इधर-उधर करते हुए वह आगे बढ़ रहा था।

कुछ दूर पर ही वैन थी। काली वैन। जब वह भीतर गया था, तब भी यह यहीं खड़ी थी। उसने उचाट नजरों से एक बार देखा भी था परंतु इसके बारे में ज्यादा कुछ सोचा नहीं था। वैन या पुलिस की अन्य गाड़ियां अक्सर आसपास में खड़ी ही रहती हैं। कोर्ट में कैदी आते-जाते रहते हैं। परंतु अब जब उसने फिर से इस वैन को देखा, उसका पूरा शरीर सिकुड़-सा गया। अपने मन के इस डर पर वह अक्सर क्षुब्ध भी होता है। अकारण इस तरह डरने का क्या अर्थ होता है। पर डरता क्या वह अपने लिए है? नहीं, डर तो वह तब जाता है जब सोचता है कि इस काली गाड़ी ने न जाने कितने लोगों की जिंदगी तबाह कर दी होगी। पर अभी जो वह डरा था, वह तो उसका अपना डर था। उसके साथ क्या होने वाला है। इनके मकड़जाल में वह किस तरह फंस चुका है। वह अच्छी तरह समझ रहा था।

वह वैन के पास आकर, वैन के दरवाजे के पास खड़ा हो गया। भीतर नजर दौड़ाई, उसके चार सहकर्मी पहले से ही उसमें बैठे थे। ये वे लोग थे जिन्हें कल शाम को पोस्टमास्टर ने पूछताछ के लिए रोका था। पुलिस तो कल शाम को ही आ गई थी। पूछताछ की गई थी। अभी, इन्हें शायद इनके घर से पकड़कर पुलिस ले आई है। सबके चेहरे पर, आंखों में अजीब सी दहशत थी। उसने अनुभव किया कि जो आतंक, अनिश्चय उन लोगों के चेहरे पर हैं, उसके चेहरे पर भी वैसा ही कुछ होगा। अचानक जेब से रुमाल निकालकर उसने चेहरे को रगड़ना शुरूकिया। संभव है उन लोगों की नजरों से अपनी नजरों को वह इसी तरह छिपा रहा हो। वह अभी पूरी तरह चेहरे को रगड़ भी नहीं पाया था कि एक सिपाही ने पीछे से टहोका मारते हुए कहा- चल चल, जल्दी कर, चढ़ जा ऊपर।

अब वह एक अपराधी था। इसी भाषा का पात्र। थाने में जाकर यह भाषा और भी रूप धर सकती है, सोचकर ही वह फिर सिहरा। करने को अब कुछ था नहीं इसलिए झटके से वह वैन में चढ़ा और एक तरफ जाकर बैठ गया। अब बाहर की दुनिया वैन की जालियों से ही दिख सकती थी। वैन का दरवाजा बाहर से बंद हो गया।

अब फिर भयानक चुप्पी। सड़क के गड्ढों में जब वैन के पहिए पड़ते और पूरी गाड़ी उछल-सी पड़ती तो वैन की खड़-खड़ की आवाज इस चुप्पी को कुछ तोड़ जाती। पर यह भयानक आवाज हथौड़े की तरह सिर पर पड़ती। ऐसा वीभत्स अपरिचय उनके बीच घिर आया था जिसे तोड़ पाने की हिम्मत शायद किसी में नहीं थी। नजरें कभी झुकती, कभी इधर-उधर भटकतीं, परंतु किसी और से भिड़ने से बचतीं। इन चारों में से ही कोई एक होगा। दो भी हो सकते हैं। मिलकर यह काम किया होगा। उसने मन ही मन सोचा। वैन की खटर-पटर के साथ कुछ दूर तक चल लेने के बाद अचानक उसने चारों के चेहरों को बारी-बारी से देखा फिर भी कुछ निर्णय नहीं कर पाया। अगर उसे पता चल जाए कि यह किसका काम है तो...तो वह क्या करेगा? क्या कर सकता है? वह मन ही मन तय करने लगा। वैसे अब वह थोड़ा-सा बेफिक्र भी हो चला था। यह सोचकर कि वह अकेला नहीं है। अगर वह अकेला होता तो शायद वैन में बैठे सिपाहियों पर टूट पड़ता, भले ही बाद में उनकी गोलियों का शिकार हो जाता। कमबख्तों ने उसे थोड़ा सा मौका भी नहीं दिया कि वह अपनी सफाई में, अपने बचाव में कुछ कह सके, कर सके।

घटना तो कल ही घट गई थी। आफिस में तभी से तनाव था। लेकिन जो कुछ उसके साथ हुआ था, इसकी कल्पना भी नहीं थी उसके मन में। रात में देर तक उसे नींद नहीं आई थी। वह सोचता रहा था। सोचना उसका काम था। वह यूनियन करता था। लोगों को बताता था- इस ऑफिस में हम पर कम अत्याचार नहीं होता है। सरकारी ऑफिस है तो क्या हुआ, बड़े साहब अपनी ही चलाते हैं। बड़े साहब से उसका तात्पर्य सीधे पोस्टमास्टर से था। उसे इस बात का दुख था कि डाकघरों में इतनी आमदनी होने के बावजूद यहां काम करने वालों की हालत में पिछले बीस वर्षों में कोई सुधार नहीं हुआ है। हर साल लोगों को उम्मीद बंधती है, हर साल उम्मीदें टूट जाती हैं।

वह पिछले बीस वर्षों से ही इस ऑफिस में है और वह लगातार देख रहा है कि यहां कुछ लोग इसलिए खुश हैं कि उन्हें ओवरटाइम का काम ज्यादा मिलता है। हर सरकारी ऑफिस की तरह यहां भी ओ.टी. का रिवाज था और कुछ ज्यादा ही था। स्टाफ की कमी है, ओ.टी. तो कराना ही पड़ेगा। कुछ लोग प्राय: रोज ही ओ.टी. करते थे और कुछ लोग ओ.टी. के लिए लड़ते-झगड़ते थे। रोज ओ.टी. करने वालों को वह बड़े साहब का दुम कहता। ऐसे लोगों से उसकी हमेशा ठनी रहती।

बीच-बीच में पोस्टमास्टर की बदली भी होती रही। जब भी बदली होती, वह सोचता, इस बार जो पोस्टमास्टर आएगा वह जरूर चमचों को मार भगाएगा। पर वह देखता और अफसोस करता कि चमचे जल्द ही नए पोस्टमास्टर के भी चमचे बन जाते। उनकी ओ.टी. उसी तरह चलती रहती।

बीस वर्षों के बीच यह चौथा पोस्टमास्टर था जिसके साथ उसकी कई बार तू-तू मैं-मैं हो चुकी थी। एक-दो बार पोस्टमास्टर ने उसे ललचाया भी था, इसे वह ललचाना ही कहता है कि वह ओ.टी. किया करे। सुनकर वह पोस्टमास्टर के सामने इतना ही बोला था- 'मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं, मुझे जल्द घर पहुंचना होता है।' लेकिन बाहर आकर बोला था- 'साला मुझे भी चमचा बनाना चाहता है।' उसकी बात पोस्टमास्टर तक पहुंच गई थी, वह जान गया था। पर पता नहीं क्यों, पोस्टमास्टर ने उससे कभी इस विषय में कुछ पूछा नहीं था।

कल शाम जब उसे घटना की जानकारी मिली, वह पोस्टमास्टर से मिला था और स्पष्ट शब्दों में उसने हिदायत दी थी कि कोई निर्दोष आदमी इस मामले में न फंस जाए। यह सावधानी उन्हें रखनी होगी। पोस्टमास्टर उससे सहमत थे और बोले थे- दोषी कोई भी हो, उसे नहीं छोड़ सकते। हालांकि उसे विश्वास था पोस्टमास्टर इस मामले को दबा देंगे क्योंकि इससे ए.पी.एम. जुड़े हुए थे।

उन्होंने सबके सामने ही कहा था- गलती मेरी ही है। मेरी ही लापरवाही से यह सब हुआ है। सिर्फ मुझे ही दंड मिलना चाहिए।

ए.पी.एम. की बात उसे सच लगी थी। हर आदमी के मन में कुछ लोगों के लिए श्रद्धा होती है। ए.पी.एम. के लिए उसके मन में भी श्रद्धा थी। उनकी बात सुनकर उसके मन में सहानुभूति उमड़ पड़ी थी- बेचारा गरीब, मुफ्त में मारा गया।'

बाद में काफी देर तक हो-हो मची रही। छुट्टी हो चुकी थी। कई लोगों को पता था, यह कोई नई बात नहीं है। हिसाब में गड़बड़ी कई बार हो जाती है। लेन-देन में भूल-चूक होती रहती है। किसी न किसी के गले में फंदा पड़ जाता है और वह वर्षों तक अपनी तनख्वाह का एक बड़ा हिस्सा यहां छोड़ता रहता है। लेकिन वह जानता था, इस बार ऐसा नहीं होगा। इस बार किसी भी गलती की बात नहीं है, यह तो सरासर चोरी का मामला है। इससे कोई कैसे बच पाएगा? अगर ए.पी.एम. पर दोष लगाया जाएगा तो किन्हीं लोगों के खास मकसद से ही।

किन्हीं लोगों से उसका तात्पर्य पोस्टमास्टर से ही था। पोस्टमास्टर तब अपनी सीट पर ही बैठे थे और उनके कानों तक यह बात पहुंच गई थी। तब वे गंभीर हुए, फिर मुस्कराए। उसके बाद ए.पी.एम. को बुलाकर देर तक बातें करते रहे। पुलिस को सूचना दे दी गई थी। छुट्टी के बाद चार लोगों को पोस्टमास्टर ने रोक लिया था। ए.पी.एम. के अतिरिक्त इन्हीं लोगों का 'खजानाघर' तक आना-जाना था।

अब वे चारों इस वैन में थे। पांच लाख रुपए की चोरी। दिन-दहाड़े। पोस्टमास्टर के सामने ही इंस्पेक्टर ने कहा था, 'पोस्टमास्टर साहब को शक है, आप अपराधियों के साथ हैं। इस चोरी में आपका भी हाथ है।' उसने भरपूर गले से इंस्पेक्टर को समझाना चाहा था- यह गलत है। वह कुछ नहीं जानता। उसे फंसाया जा रहा है। वे लोग उसकी बात सुनकर हंस पड़े थे। उसने देखा, वैन थाने के पास आकर रुक गई है और उसे उतरने के लिए कहा जा रहा है। वह नीचे उतर आया। उसके साथी भी। उन लोगों को थाने के भीतर एक टेबल के सामने खड़ा कर दिया गया। उसने देखा, बिना उससे एक शब्द पूछे रजिस्टर में उसके नाम बहुत कुछ लिख दिया गया है। उसे एक बंद कोठरी में डाल दिया गया है। उसके साथियों को उससे अलग कर दिया गया है।

कोठरी में लोहे का बड़ा दरवाजा है जिसमें लोहे की लंबी-लंबी छड़ें लगी हैं। कोठरी के भीतर आकर उसे लगा, उसने सचमुच चोरी की है। कल सुबह जब इंस्पेक्टर उससे मिलने आएगा तो प्रसन्नता के साथ कहेगा- 'हमारे हाथों से कोई नहीं बच सकता। तुम्हारे घर में हमें चोरी के रुपए मिल गए हैं।' इंस्पेक्टर उसे देख-देखकर मुस्कराता रहेगा और वह चुप खड़ा रहेगा क्योंकि तब वह समझ नहीं पाएगा कि किस तरह इंस्पेक्टर की बातों का प्रतिवाद करे।